पाछें दंडवत करि अनोसर करैं मंदिर को ताला मं
गल करें पाछें दिन घडी ६ पाछिलो रहें तब स्नान
करि मंदिर में आय तिलक छापा करि उत्थापन भो
ग की पारसा जे तामें ईतनो राखो ताके लडुवा ४ तर
मेवा मिठाई नग ४ की कटोरी १ अरु पत्रनीपातें भा
दोवडी ४ जाई ईतनो ओर धरनो फलाम्रूंग अथवा मूं
ग की ४ दारि अथवा चना की दारि पहफिरनो फिरनो
धरनो काचे भिजोये धरे जब मूंग धरें तब चूनन धरे
मूंग में गिरी की फाक धरें चना की दारि में अजवायन
डारि मिलावें लोन की कटोरी जूदी धरें मूंग दारि धरें
तब कटोरी लोन तथा मिरच की जुदी धरें याप का
रासिद्धि करि तब घंटा बेर तीन ३ बजाई संख नाद बे
र ३ करवाई मंदिर के बार ने जाई भगवद् नाम ले
हा मंदिर के किवाड खोलें मंदिर में जाय सिंघासन
आगे की नह पर की अपमों बाचो की जो होई सो ऊ
ठावें पेडा पर की गादी उठावे पाछें माला झूल की प
हराय किवाड खुलाय पूह धनि होई झारी तथा बीडा
की तब कडी उठाई ल्यावें झारी ठलाई नई भरि लै जा
य धरें तब टेरा देहें सिंघासन पर गादी आगे छोटी प
डगी धरें तापर उत्थापन भोग की साजी हें सो भोग धरि थार
रे टेरा देहे बाहिर आवें पाछें सिज्या मंदिर में जाय सि
ज्या पास ते बीडा की पान की कडी झारी तब्दी यहें सब ऊ

ठाय ल्यावे। तब्बी धोइ सिज्यामंदिर में धरि आवे। पा
छेंऊत्थापन भोग के बीडा की तबा सिज्या के बीडा की
तबकडी साजे। दोऊ तबकडी में कटोरी कपूर की अ
थवा जायफल जावित्री की रितु अनुसार धरे। उत्था
पन भोग की तबकडी में बीडा ४ धरने। पाछें सवारे
की सिनाई सिज्या पेरि समारे। पाछें भोग सरायवे
कूं ऊबे। बीडा की तबकडी सिंघासन पर दाहनी दिस
धरि पूर्व की रीति सों आचमन करावे। मुखवस्त्र करि भोग
सरावे। सिज्या पासनें चोफल की चोकी सिंघासन पर
आगें ल्याय धरे। तब्बी बीच की चोकी के आगे धरें। पा
छें किवाड खुलाय दर्शन करावे। पद १ गाय जाय ते
लो दर्शन होई। पाछें आरती क खिलोनां खंड बेग
डकी चौकी चौकी न होय हस ब ऊठाय। हेरा दे। बीडा
की तबकडी झारी ऊठावें। आरती फेरि भरि धरे। हाथ
दें पडगी ल्याय धरे। आप र संज्या भोग की थार धरें
थार में ऐक नोपकवांन समर्पेनो। सो मंगल भोग में
भयो होय नाहीं में को पाभोतिभोग धरि सिज्यामं
दिर में जाई सिज्यामंदिर के बंटा में ओर धरि बंटा
पडगी परि धरि सिज्या पास धरे। तपाझारी धरे बी
डा की तबकडी सब ठीक करि धरे। जो ऊष्मकाल हो
य तो बंटा आदि सब वासि छिकरे राखें। सेंन आरत
पाछें जब सिज्या बाहिर निवारी में पधारें तब सब

से·नि साथहीवडोकरें।याभांतिसिंगारवडोकरिमुखवस्त्रसे
८ श्रीअंगसबपोछें भलीभांतिश्रीअंगलूछकरें।पाछें
श्री[illegible]केसिंघासनपरपधरावें।पाछेंग्वालनुं नावेंगरि
बिडाउजळमपधैयाकरावें।वस्त्रएकदुहरोश्रीठाकुरजी
केआगेंबिछावें।नयावस्त्रएक।१।चोतहकरिआपनें
पमेंराखें।बेसरिश्रीठाकुरजीकीवडीकरि नवधैया
द्धिहोई।नवनवकडीमेंकरि आपनेंहातमेंवस्त्रपरर।
खिआंखिमूंदिकरिअरोगावनजोगौय।जोवोदूसरीन
वकडीमिसिद्धिहोई।नवनोंईराखें।ऐसेंनवकडीवत
या।१०।अरोगावें।पाछेंवेसरिधरायउवराधरें।पाछें
जी श्रीपादुकाजीकोचोकीपरपधरायसिंगारवडोकरि।सिं
ज्यासवारिसिज्यापरपधरायपरिनुअनुसारजगावें।पा
छेंडगरासरावें।आचमनकरायश्रीमुखवस्त्रवीडोधू
रिबीडा।१।सिंघासनपरधरें।पाछेंपडगीजगायमेंवि
रवस्त्रकरिसिंघासनकोफलटकनावांधें।चोकीमांडें
झारीभरिधरें।चोकीपरपातरि।१।विछावें।चोकीकेनी
चेंपीढा।१।धरें।पडगी।१।चोकीपासदाहनीदिसधरें।ता
परलोनसधानाकीकटोरीधरें।नीवूकोसधानानध
रें।साकएककटोरामेंकरि६चोकीपरिधरें।ग्वालकोल
हैंडासरससवग्वालैरिकीफली।।वामेघीसकरकं
दी।पिसाकसेनभोगमेंनकरनो।वाकोफिरनेफिरते
फिरनेकरने।ग्याकढीलोहोई।तोचमचामेंलेकटोरा

तपाछें ठाकुरजी। निं मंदिर में जाय। बीडा सिंघासन पर धे
रे। सो हिनी ओर जो दूसरी बेर खवावननें यो होइ तौ खा
नहुंकूं बीडा २। सिंघासन पर बाई दिस धरें। पाछें
आचमन कराय मुखवस्त्र करि भोग सरावें माला प
हरावें। चोकी कूं उठाई मंदिर धोवें। पाछें सिंघासन को
पटका नारवो ले। पाछें किवाड खुलाई दरसन होई आ
रती करें। दंडवत करि हाथ धोइ टेरा दें श्रृंगार की चो
की बस्त्र सुद्धा सिंघासन आपु ल्याय धरें। पाछें माल
वडी करि सेज्यापास धरि आवें। पाछें प्रभून के सिंगा
र की चोकी पर पधरावें। वागो बडो करें। सूके अंग वस्त्र
सु श्री अंगवस्त्र पोंछें। पाहो बीजपूर राखे होइ तो वे
हु वडे करें। पाछें प्रभून सिंघासन पर पधरावें। दंडव
त करि हाथ धोई। पाछें सीतकाल होई तो हाथ से
के पाछें। तीनो ठेर की बेसरि संभारि देखें। पाछें श्री
ठाकुरजी श्री स्वामिनी जी सुद्धा साथ ही सिज्या प
र पधराय पोढावें। तब यह श्लोक पढें। भावात्मका
स्मनः इत्यंतस्वकेसेसरूपबो। रमयेत्स्वराधया
कृष्ण राधाय पनो रसि भावतः। पाछें रीत अनुसार
उठावें चादर डलाई सुपेती जो अच्छी होई सो सब
ओर तें संवारि धरें। पाछें श्री गोवर्धन सालिग्राम
सेवा जी की चोकी श्री ठाकुरजी के दाहने हाथ धरि श्री
गोकुलेसजी की पलिंगडी सो लगाई ओढाई ये

ठाकु ६

पाछें श्रीगुसांईजी की सिज्या ने श्रीगुसांईजी को
दाहिने पांयन की ओर पूरब पीठ पश्चिम मुख राखि
पोढावें । श्रीगोकुलेशजी की पादुकाजी की पलिंगडी
ठाकुर के दाहने कूं उतर मुख राखें । श्रीगोवर्द्धनसालि
ग्राम के नीचें श्रीगुसांईजी की पलिंगडी तें बिछा
इ ९ जगें राखियें । तहां पीढा । धरि । बंटा भोग को
तामें भोर । धरें । तपा झारी हु धरें । दोउ पलिंगडी
के बीच राखें । सिज्या भोग को बंटा तपा झारी तपु
बीडी कौ तबकडी सब आगें सिद्धि करि राखें है
सो सब सिज्या के पास बांम ओर । पडगी पर धरें । तष्ठी
हु धरें । तब श्रीठाकुरजी कूं श्रीस्वामिनीजी सहित
पोढावें । तब ते यह श्लोक पढीये निरभृत कीडनोर
लिमहाकुंजे विवाससो : अन्योन्यंमभयैवासीह
न्योस्योश्चिंतासुकः । रतिश्रमशायानयो रत्नसतोव
नांभोजयो : कलिंबिमषिकुजतो रभीमिथुंमुखमि
थः सस्मितं । रतांग नरितांकयो मिलित जानुसंवाह
ने । यदांबुजितन्यानिम क्वानिलुटंति राधेसया ॥ २ ॥
केलिश्रांत शयन श्रीराधासपदसरोजानि ॥ क
पयांकुलतांगनिमज्जरसिकदांनुसंल्नालई पिष्ये हुं ॥ ३ ॥
प्रातकुंजगृहान्तबहपदिसमागत्या स्थिता त्वम
ज स्यभा ॥ सिदहांसि चर्बितमिदं कार्यहस्तेन
नु । तांबुलस्य सदा पुनस्तादि हसाछि इमुकाव

मुख्या कार्यः किसलतंमसी हसिपुष्टि त्वंस्कोमि
नीलंतरा ॥ ५ ॥ श्रीवल्लभाचार्यमतेफलं नत्वा क
ष्टमेवाव्यभिचारहेतुः ॥ भमैवरतुस्मिन्नवधोक म
।तिस्तत्रोपयमेणोखिलंसईना ॥ ६ ॥ तयोर्हं यदं
हीवरसुंदराही वृतस्यव हावनं नंस्त्वा घे ॥ सर्वोत्म
भावेनसहास्यपत्नास्यमस्याग्निश्रीं शास्त्रिफलमान
भूतिः ॥ श्रीमदाचार्यपदांबुं नवे षेसकृदिस्थि
।ते ॥ मदाश्रीराधिकाकांतस्वंत्रतिष्ठतिसुस्थिरः
॥ ७ ॥ मनःपित्रपरोभोगभजनंसर्वथामते ॥ ऊतया
न्मानो ॥ न न्याहृतिः काचनविद्यते ॥ ८ ॥ यह
श्लोकनको अर्थविचारतदंडवतकरि निकसी
ये ॥ हीवीनपासीनकालन होइ तो ज्यांगीठीबाहि
रकाटमंदिरको दंडवतकरिबाहिरआवे ॥ यारीति
सो नित्यसेवाकरै ॥ श्रीकृस्नायनमः ॥ प्रतिगो
कादसीकोगोपीवल्लभमें भोगधरें ॥ ताको प्रकार
रोटीगुडकटोरीनमें ईमनीवल्लभ धरीये ॥ घी
भुज्योसाक ॥ रायता ॥ दहीं ॥ बांध्यो ॥ बूरा ॥ सिखरन
सधाना ॥ लवण ॥ याभांतिप्रतिएकादशीकु धरीये
॥ श्रीकृस्नायनमः ॥ प्रतिद्वादसीकू श्रीगोपीवल्ल
भमें भोगधरीयें ॥ ताको प्रकार ॥ भा ॥ दोवडी ॥ १४ ॥ तिनका
र्निकवडी ॥ २ ॥ नाईवडी ॥ भात ॥ पापड ॥ ॥ तिलवडी
घेवरिकचुरीया ॥ औरकटोरीनमें घी भुज्योसाक
निजमंदिरकोंतारनामगालनकृरियु ॥ पाछें तिवारीकोंता
[illegible] बाहिरका [illegible]

फागुनसुदी १२

राषता हतो बांध्यो सधांनालवण ओरऽपगहें
नवदी १२ पर्यंत वडी भात की जागें खीचडी धरे
बाकी सब या भांति धरें पाछें चैत्र वदी १२ ते वैसा
ख वदी द्वादशीता[illegible] फेरि वडी भात धरनो बाकी परीयंत
सब वाही भांति धरें वैसाख वदी १२ श्रावन वदी
१२ ताईं सिखरन भात दही भांति धरें फेरनो फि
रतो धरनो सिखरन भात धरें न वृनिरालनो सिख
रन भात बुरा मेलि धरें दही भात धरें नवईन नो
ओर हु धरें कटोरीन में मुन्यो साव साधांनाल
वण या भांति धरें ओर सनि द्वादसी को राजभोग
के साथ श्रीयमुनाजी को भोग धरें ताको प्रकार ठा
कुर के दाहनी दिस चौकी मांड तापर हौडी धरें न मारी
कि मान ही गाही धरि बीनती करि श्रीयमुनाजी
को ध्यान करि भाव सों पधरावें ऊस्नकाल होइ
तो चाहर स्वेतन उढावें वां मांहि स पडगी पर ला पासा पेहरावें
री धरें चरण छुवें दंडवत करि पडगी आगें धरें मा
ठ १० अथवा ओर सांमिग्री होइ तो वह थार में ध
रि भोग धरें सीतऊस्नकाल होइ तो सिखरन भात
अथवा दही भात जो भयो होइ सो धरें आंम रख
रबुजा हु धरें या भांति यमुनाद्वादसी को करनो
सीतकाल में रोक दोयवेरि मंगलभोग में हु
सरखडी अरोगें ताको प्रकार जो नित्य धरत है सो

धरें पडगी । सखडीकीमाडें थारा १ मेंनवएको
भात अथवाखीचडीधरिवापर घीकोकटोराधु
रें न मेंचमचाधरे थोडोघीचमचासोलेंनोंन
कोभातवाखीचडीहोई तोमेंडारें दुसरीपडगी
परथारा १ मेंयाभांतिधरें बीचोबीचकटोकोकटो
रा पापडतरे तिलवडी घेवर कचरीयापस्याकन
ही सधानाकीकटोरी १ मो धरें याभांति भांतिमें
मंगलभोगमेंदोईबेरिसखडी धरे एकबेरिउो
ऊंगकोभात एकबेरिखीचडीधरे श्रीहरि । सि
ज्यासवारिवेकोप्रकार सिज्याकोसिराहनोपछि
पा मपाईनपुरबकोराखनो मुखीयाहोईसोईनविछ
संवारें सिज्यामंदिरमेंसीतकालविषेनंहरुईदार
सिज्यामंदिरनेंहाथचारि ओरघाटऐसीबिछावनी
सिज्याकेच्यारुंओपायकआईधनीचेंगीरदाबकेऊपरपड
ईयाधरने ऊस्मकालमेंतहनहीं बिछावनी सि
रदाहुनहीं परनसीतहोई तेबसपेदीतीनबिछा
वनी कसनाकीरीतिडोलपीछें आछोदिनदेखि
कसनाबांधने सोश्रीगोकुलनाथजीकेऊत्स
वमहाऊत्सवमांईरहे ऊपरांतनहीं कसनाके
रुवामेंघुघरूलगावने याप्रकारसोंकसनाकस
ने पाछेंदिलस्तहोई मखमलके ऐकसिरहाने
ऐकपायपन ताकेलपेटना आछे मीहीं खेनवस्त्रके

लपेटनै । बीलस्तिसिज्यासोच्यारच्यारआंगुरघाटघा
टरहे । दोऊबाजुलस्तमेंऊबाजुघुघरूडारिलगावनै
सोंऊबाडोरीमेंसीराराखनै । ऊबासिज्याकेदोऊओ
लंलटकतेरहैं । पाप्रकारसोंऊबाहोऊबालस्तलगा
गाईये । एकसिरहांनैंएकपांइतधरीयें । सिरहां
नैंकेबालबांहस्तआगेगिरदाहोइ । मखमलकेदो
ऊओरधरनै । ताकेलपेटनराखनांसिरहांनैंकेबा
लस्तमेंफैनीहोइहरिआईकी । तामेंकस्तुरीधरि
दोऊओरडोरीसोंबांधिदेनी । जंछमीकोबांधें मा
सोवर्षपर्यंतरहे फेरिजन्माछमीकोनईहोइपु
रोसीनहोइतोसुपेतीतीनसाटिनटबनीरात्र
कोसुपेदीमेंचादरिमीहीनसाटनी । दिनमेंबाद
रनसाटनी । सुपेती । मेंरूईदोयसेरपडें । ऊस
कानमेंसिज्यापरसुपेती । पाछेंगाढेवस्त्रकीबि
छावनी । तापररोम्कहेहरपटीवाखे । रविविछावेडोल
के । दूसरेदिननैंविछैसोदिवारीकेदूसरेदिनताई मषम
रहैं । उपरांतनहीं । तापरचादरगाढेरंगकीबि
छावनी । तथाबालस्तकेलपेटनादोनदोनलपे
टनै । सिज्यापररजाईऊसुवाचादरिसमेंअनुस
रजोईसोऊढाईराखनी । एककोनोबाकुरकोदि
सकोऊलटिराखनो । बाहरजादिनणकुराहिडो
रावेहे । तादिननैंरंगीनसबरनरंगको । दिनमेंओरहैं

जन्माष्टमी को केसरि को दुसरी ऽष्टमी तोईर हें
सोउहदिनमें राखनी रात्रिको चाहीर सदा खुन राखु
नी या भांति चोरस्या ढाकिराके खनो । सो राज भोग
उपरांत उठाई लेनो । सिज्या के पास साज धरनो
सो सामिग्री को बंटा सिरहाने धाई न आपा पास पडगी प
दिनमें बंटा नही । पडगी पर झारी । धरें । पाटिया से
लगाई झारी के नीचें चो पड की चोकी मांडनी हा
हने दिस बाई दिस सिज्या ने ऐक किनारे दूरि पड
गी पर झारी सिरहाने के पाई आपा सा । उस्मका
ल न होई तो झारी के नीचें पडगी । १ पर करवा । १ मा
टीको स्वेत भीजे वस्त्र सो लपेट धरनो । तापर कटो
री १ क में कर वडी । धरनी । ताके नीचें तष्टी की प
डगी धरनी । ताके नीचें तष्टी पर बीडा की नवकडी
धरनी दिनमें बीडा । १० रात्र को बीडा । १५ कटोरी में
जायफल जावत्री लपात कपूर सो बीडा की नवक
डी में धरें । उस्मकाल न होई तो चुंदन को बंटा तथा
मना नवकडी के बीचो बीच धरनो । तथा सिज्या ने
विनारे १ हरि सिरहाने चोकी रेखा । १ धरनी जंबी
तापर पंखा घूघरी या सिसब भांति के धरें । सब प
डगी नीचें गिरराक पडा के चो नहा राखनें पवि
त्रा ऐकादसी तें ठाकुरजी सबरे राबाहिर रहें त
या सिज्या दिनहु में बाहिर रहें सो बिजे दसमी के
जोनहमें राग न परे उस्मकाल लों न राखे

एकश्रीगुसांईजीकेउ[illegible]
[illegible] के
सेनभोगधरमें फूलगो कें एबाहिरनपधारें सिज्या
केसाज वर्षदिनमें ७ नयेहोई सीतकालकीरि
तुके ॥ जन्माष्टमीतथा दिवारीको एकसाजमेंई
तनो ॥ चादर १ मीही ॥ चादर १ गादी ॥ गलेफदोय
वालिस्तकीदोऊ सजया ॥ तैसेही भांतिकरनो ऊस्ना
कालकोसाज देष्य ॥ एकडोरकूं ॥ एकमतलभू
केऊलसवको ॥ एकसाजमेंई तेनो ॥ खेसवादोहर
एकपटो चाहर १ मीही चादर १ गादी ॥ गीलाफ
दोय वालस्तकीदोह ॥ ईया भांतिदोऊसाजकर
ने ॥ सिज्याकेपासराजभोगकी चोपडकी चोकीन
हीरहतहै ॥ श्रीहरि ॥ ॥ वर्षदिनमें गदर च्यारिधन
येहोई ॥ एकप्रबोधनीको ॥ लालजरदरिआई ॥ बालाल
अतलसको ॥ एकश्रीगोकुलनाथजीकेमहाउत्स
वको ॥ लाललवा जरदहरिआईको एकवसंतपंचमी
कोजरदहरिआईको ॥ एकश्रीगुसांईजीकेउ
त्सवको लालखवा जरदहरिआईको याभांतिग
हरि ४ करने ॥ श्रीहरि ॥ ॥ रामनोमीतांई वाग
ठाकुरजीपहरें रामनोमीऊपरांत खुलेवंदके[illegible]
गारहोई बडीगरमीहोई तोपिछोडातूनेरंगी
नधरें ॥ पखवाजूनेरामनोमीतेंधरने ॥ श्रीहरि ॥
[illegible]चारोभोगधरिवेकोमनोरथहोई तो जपईहो
[illegible]लिये ॥ ताकेप्रकारदोपराधरीये दोह

13